विष्वास की षक्ति

विष्वास में अभूतपूर्व षक्ति है। विष्वास की यही षक्ति मूर्ति पूजा का आधार है। यदि व्यक्ति में विष्वास हो तो पत्थर की मूर्ति में भी भगवान प्रगट हो जाते हैं! केवल और केवल विष्वास की गहराई ही उसकी सत्यता प्रमाणित करने में सक्षम है। जब व्यक्ति संपूर्णता से विष्वास करता है, तो भाव स्वतः ही अन्तर्तम मन से उठता है। और भगवान तो केवल भाव के भूखे हैं।

भाग्य की विडम्बना तो देखिए, आज कलियुग में भगवान पर विष्वास तो बहुत दूर की बात, व्यक्ति का स्वयं पर से भी विष्वास उठ गया है। जीव ईष्वर का अंष है। ईष्वर की सब षक्तियॉ उसके अन्दर निहित हैं। अनेक रोग, चिंता, परेषानी और विशाद का मुख्य कारण है विष्वास की कमी!

रोग आने पर यदि व्यक्ति बार बार अपने मन में दोहराता है कि 'मैं ठीक हो जाउॅगा' तो अवष्य ही रोग ठीक हो जाता है। प्रभु पर विष्वास रखते हुए; उनकी कृपा का आवाहन करते हुए; उनको पुकारो! प्रभु सच्चे दिल की पुकार अवष्य सुनते हैं!

'रोग जनित भय रोग से भी अधिक हानिकारक है।'—स्वामी निरंजनानंद सरस्वती

यदि व्यक्ति इस सरल षिक्षा का गहराई से मनन चिंतन करता है और इसका पालन करता है; तो आष्चर्यजनक रुप से लाभ होता है। भय रुपी दानव के अन्तःकरण से हटते ही अनेक उपचारों का प्रभाव दुगुना, तिगुना हो जाता है।

वर्तमान मे प्रत्येक परिस्थिति को पूर्णतया स्वीकार करते हुए; रोग और दुखों की चिन्ताओं को मन से सरलता से हटाया जा सकता है। जैसे जैसे व्यक्ति अपना चिंतन सकारात्मक दिषा में मोड़ता है; रोग स्वतः ही उसका पीछा छोड़ देता है!